What is Arya Samaj?

Arya Samaj, founded by Maharshi Dayanand Saraswati, is an institution based on the Vedas for the welfare of universe. It propagates universal doctrines of humanity. It is neither a religion nor a sect.

ARYAN VOICE

YEAR 37	9/2015-16	MONTHLY	March 2015

Dates for your diary

(Festivals celebrated at Arya Samaj Bhavan)

- **Holi – Sunday 8th March - 11am – 1pm**
- **Ram Navmi – Sunday 29th March - 11am – 1pm**
- **Arya Samaj Foundation Day Sunday 12th April - 11am - 1pm**

Save the date

- **Vedic Vivah Mela (Matrimonial get together) Saturday 30th May 2015** **(see page 18)**

ARYA SAMAJ (Vedic Mission) WEST MIDLANDS
(Charity Registration No. 1156785)
188 INKERMAN STREET (|OFF ERSKINE STREET), NECHELLS, BIRMINGHAM B7 4SA
TEL: 0121 359 7727 E-mail- enquiries@arya-samaj.org Website: www.arya-samaj.org

CONTENTS

Calamities Release the Bondages	**Krishan Chopra**	**3**
चौथा सँस्कार-नामकरण सँस्कार	**आचार्य डॉ. उमेश यादव**	**5**
Hall Hire Advert		**10**
अध्यात्म के शिखर पर-१८	**आचार्य डॉ. उमेश यादव**	**11**
Cost for our services		**14**
Celebration of Republic Day of India Report		**15**
Matrimonial Advert		**17**
Notices for Vedic Vivah Service (matrimonial)		**18**
Vichar Gyan Pravah		**19**
List of Festivals for Year 2015		**20**
News (पारिवारिक समाचार)		**21**

For General and Matrimonial Enquiries
Please Ring
Miss Raji (Rajashree) Chauhan (Office Manager)
Monday to Friday between: - 2pm to 6pm,
Except Wednesday: - 10.30am to 1.00pm. Bank Holidays - Closed
Tel. 0121 359 7727
E-mail- enquiries@arya-samaj.org

Calamities Release the Bondages

By Krishan Chopra

नमोऽस्तु ते निर्ऋते तिग्मतेजोयस्मयान्वि चृता बन्धपाशान् ।
यमो मह्यं पुनरित्त्वां ददाति तस्मै यमाय नमोऽस्तु मृत्यवे ॥ अथर्ववेद ६.६३.२

Namoastu te nirrite tigmatejo yasmayanvi crita bandhapasan l yamo mahyam punarit tvam dadati tasmai yamaya namo astu mrtyave ll

Atharva 6.63.2

Meaning in Text Order

Namah astu = we salute
Te = you
Nirrite = calamities
Tigmatejah = harsh misery
Ayasmayan = iron made
Viccrita = break
Bandh pasan = iron fetters
Yamah = the controller
Mahyam = for me
Punah it = again also
Tvam = to you
Dadati = endowed with
Tasmai = that
Yamaya = the lord who controls
Namah = obeisance
Astu = to you
Mrtyave = the destroyer (death).

Meaning

O grave calamity! We salute you. O grave misery! Through you we cut our bondage of iron fetters. O The master of our destiny! Give us this opportunity to loosen the bondage of our sins. Our appreciation is to the destroyer yama and we pay homage to the controller of the universe.

Contemplation

No one wishes to face the adversity, misery or calamities in our life though we know very well that they are an integral part of life. Life is a mixture of sunshine and shade. The wheel of suffering and comfort follow us like shadows. The prayer of this mantra teaches us that all adversities and suffering in life are for our betterment. The devotee welcomes the misery and calamities and salutes them because these will provide them an opportunity to cut their bondage of sin. We commit sins and tie ourselves in bondage and these adversities play a vital role to cut those bondages. Through these sufferings we avail ourselves of an opportunity to cut our bondages. Indeed, they are blessings in disguise.

Severe adversities will cut the bondage of our great sins. Therefore O adversity! We are not afraid of you. We welcome you with pleasure. We faced the miseries before but they were not so heavy. We feel this time that severe suffering will cut the bondages which are heavy like iron fetters, which are difficult to cut. Because of these bondages our progress is halted.

We offer our homage to the Lord who is yama, the controller of the universe. His act of destruction is for our welfare. Therefore, we welcome all the adversities sent by Him.

चौथा सँस्कार-नामकरण सँस्कार

आचार्य डॉ. उमेश यादव

परमात्मा ने सृष्टि बनायी तो सबके नाम भी दिये । न केवल पदार्थों के अपितु हर प्राणी के और यहाँ तक कि हर मनुष्य के लिये भी आज्ञा दी कि सबका एक ऐसा नाम हो जिससे उसे पुकारा जाये । अत: आचार्यों ने हर होने वाली संतान को एक सार्थक, सरस और पुकारने में सरल हो; ऐसा नाम देने की योजना बनायी । नाम चास्मै दद्यु:- पारस्कर गृह सूत्र--हरेक को नाम दें-यही नामकरण सँस्कार की संज्ञा से जाना गया । यह सँस्कार जन्म के ११ वें, १०१ वें दिन या दूसरे वर्ष जन्म दिन पर होना प्रामाणिक बताया है । वैसे इन तिथियों के आस-पास अपनी सुविधानुसार ११वें दिन के वाद किसी दिन भी कर लें तो कोई हानि नहीं । निर्देशित तिथियों में हो तो सर्वोत्तम है लेकिन ऐसा भी न हो कि निर्देशित तिथि ढूँढ़ने के चकर में करें ही न । इसलिये महर्षि दयानन्द ने सुविधानुसार कहकर यजमान के लिये तिथियों के निर्धारण में काम आसान कर दिया है । अत: ११ दिन बीते पीछे जो दिन अनुकूल पड़े, उसमें कर लें ।

युग्मानि त्वेव पुंसाम्, अयुजानि स्त्रीणाम्सँस्कारविधि-महर्षि दयानन्द- इन गृह सूत्रों को महर्षि दयानन्द ने लिखा और बताया कि पुरुष का नाम युग्म-२, ४ आदि (इवेन) और स्त्री का नाम अयुग्म-३, ५ आदि (औड) अक्षरों का होना चाहिये । पर यह समयानुसार परिवर्तनशील हो सकता है । पुराने कई ऋषियों के नाम इस नियम के विपरीत प्राप्त हैं । यथा- गौतम,कपिल, कणाद, अशोक, विदुर, नारद आदि पुरुषों के और ऐसे ही अनुसूया, सीता, गंगा, यशोधरा गार्गी आदि स्त्रियों के । हाँ, इतना ध्यान अवश्य हो कि नाम सार्थक, श्रुति-प्रिय और उच्चारण में सुगमता हो । नाम के आगे शर्मा, वर्मा, गुप्त और दास आदि वर्णानुसार लगाकर अक्षर-सिद्धान्त को ठीक किया जा सकता है । ब्राह्मण का शर्मा, क्षत्रिय का वर्मा, वैस्य का गुप्त और शूद्र का दास उपनाम (सरनेम) लिकने का विधान आश्वलायन गृह सूत्र में उपलब्ध है। नामकरण-काल में वच्चे

का उपनाम भी वही होगा जो माता-पिता का है पर गुरुकुलीय शिक्षा पाने के वाद जब उसकी एक निश्चित सी वृत्ति बन जाती है, तब आचार्य ही उसके गुण-कर्म-स्वभाव के आधार पर उसका वर्ण निधारित करता है । वही वर्ण समाज में उसका निश्चित हो जाता था पर आजकल प्राय: ऐसा नहीं मिलता वल्कि माता-पिता का वर्ण ही सारा जीवन वच्चे के साथ रह जाता है । वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार वर्ण-परिवर्त्तन गुण-कर्म-स्वभाव के आधार पर सम्भव मान्य है ।

तद्धितान्त नाम-निषेध - माता-पिता या गोत्र के नाम पर रखे नाम को " तद्धित " कहते हैं । जैसे- पाण्डव, राघव, कौन्तेय, भार्गव, वासुदेव, जानकी आदि । ये यद्यपि व्यक्ति-विशेष के लिये खाश अर्थ में प्रयुक्त हैं पर माता-पिता या गोत्र के नाम पर होने से तद्धित हैं । पाण्डव से किसी एक का नहीं वल्कि सब पाण्डु-पुत्रों का वोध हो रहा है । अत: यह नाम उचित नहीं । नाम वही सार्थक है जो एक नाम एक का ही वोधक हो । रूढ़ी में पड़कर वह नाम एक के लिये प्रयोग होने लग जाये, वह बात अलग है-जैसे राघव आदि । रघु-कुल के सब को राघव ही कहेंगे पर अपनी ख्याति विशेष से राम को ही लोग राघव जानने लगे । वैसे ही वसुदेव-पुत्र वासुदेव केवल कृष्ण के लिये रूढ़ बन गया । जानकी केवल सीता के लिये प्रसिद्ध हुआ, अगर जनक की दो बेटियाँ होतीं तो जानकी किसे कहते ? अत: तद्धितान्त नाम दोषपूर्ण है ।

तिथि-देवता व नक्षत्र-देवता-विचार- विधि में इन के नाम से आहुतियाँ दी जाती हैं । ये आहुतियाँ हमें वच्चे के जन्म-काल का निर्देशित करती हैं । इतिहास के लिये काल-गणना में किसी के लिये भी महत्त्वपूर्ण हो सकता है । अत: तिथि तथा उसके देवता, नक्षत्र तथा उसके देवता इन चारों से कुशल पुरोहित के निर्देशन में आहुतियाँ उचित ही हैं । इसके लिये सँस्कार-विधि में महर्षि दयानन्द ने इस प्रकार एक इनकी सूची दिखायी है ।

तिथि-देवता-१-ब्रह्मन्, २-त्वष्टु, ३-विष्णु, ४-यम, ५-सोम, ६-कुमार, ७-मुनि,

८-वसु, ९-शिव, १०-धर्म, ११-रुद्र, १२-वायु, १३-काम, १४-अनन्त, १५-विश्वेदेव, ३०-पितर

नक्षत्र-देवता-अश्विनी-अश्वी, भरणी-यम, कृत्तिका-अग्नि, रोहिणी-प्रजापति, मृगशीर्ष-सोम, आर्द्रा-रुद्र, पुनर्वसु-अदिति, पुष्य-वृहस्पति, आश्लेषा-सर्प, मघा-पितृ, पूर्वाफल्गुनी-भग, उत्तराफल्गुनी-अर्यमन्, हस्त-सवितृ, चित्रा-त्वस्टृ, स्वाति-वायु, विशाखा-इन्द्राग्नौ, अनुराधा-मित्र, ज्येष्ठा-इन्द्र, मूल-निरृति, पूर्वाषाढा-अप्, उत्तराषाढा-विश्वेदेव, श्रवण-विष्णु, धनिष्ठा-वसु, शतभिषज-वरुण, पूर्वाभाद्रपदा-अहिर्बुन्ध्य, रेवती-पूषन्।

नाम में स्पर्श, अन्त:स्थ, ऊष्म आदि वर्णों का प्रयोग- इसका ध्यान भी आवश्यक है । यह व्याकरण की बात है । आप इन्हें ऐसा जानें- १. स्पर्श वर्ण- हर वर्ग के ३रा, ४था और ५वाँ अक्षर-ग,घ,ड., ज,झ,ञ, ड,ढ,ण, द,ध,न, ब,भ,म । २. अन्त:स्थ वर्ण- य, र, ल, व, ह और एक उष्म-श -ये घोष वर्ण भे कहे जाते हैं । जैसे-भद्र, भद्रसेन, भव, भवनाथ, हरिदेव आदि ।

स्त्रियों के नाम में ध्यातव्य बातें- इन पर नाम रखना अवैदिक माना जाता है-जैसे-नक्षत्र (रोहिणी, रेवती), वृक्ष (चम्पा, तुलसी), नदी (गंगा, यमुना), अन्त्य (चाण्डाली), पर्वत (विन्ध्याचली, हिमालया), पक्षी (कोकिला, हँसा), अहि (सर्पिणी, नागिणी), प्रेष्य (दासी, किंकरी), भयंकर (भीमा, चण्डिका) इत्यादि । इससे उनके स्वयं के गुण छिप जाते हैं, बतलाना मुश्किल सम्भावित है । उसका अर्थ नदी, पर्वत आदि तक ही सीमित रह जाता है । फिर भी पौराणिक आचार्यों के लिये ये स्वीकार्य हैं । पर वैदिक नाम चुनना सबके लिये सार्थक सिद्ध है । बच्चे को माता-पिता के गोद में देना- विधिगत् यह एक प्रसिद्ध विधि है । जब बच्चे का नाम उद्घोषित करने का समय आता है तब पहले माँ बच्चे को उसके पिता के गोद में देती है फिर पिता पुन: माँ के गोद में ही वापस दे देता है । बाद में "ओ३म् प्रजापतये स्वाहा" मंत्रोच्चारण के साथ आहुति दी जाती है । प्रजापति परमात्मा का नाम है जो सब प्रजाओं का स्वामी, रक्षक व पालक है ।

माता-पिता के बाद हर संतान का मालिक तो प्रजापति परमात्मा ही मान्य है । अत: यह आहुति सर्वथा सार्थक ही है । हम सब परमात्मा की संतान हैं; यह भावना करके प्रजापति परमात्मा से बच्चे की पूर्ण रक्षा हेतु प्रार्थना की गयी है । लेकिन यह बात ध्यान देने योग्य है कि पिता के गोद में बच्चे को पहले माँ देती है; मानो अपने पति से कहना चाहती है कि आप ही इसके पिता हैं अत: इसकी जिम्मेवारी समझें । पिता यह भाव को समझकर पुन: बच्चे को माँ के गोद में ही वापस सौंप देता है, मानो वह कहना चाहता है कि मुझे मँजूर है, इसके विकास व रक्षा की पूरी जिम्मेवारी लेता हूँ पर इससे पूर्व जब तक यह पढ़ने-लिखने के लिये घर से बाहर नहीं जाता और विशेष कर माँ का दूध पिता है तब तक इसे मुझसे अधिक तुम्हारी जरुरत है । इस प्रकार नामकरण स्थल सभा में दोनों बच्चे के पालन-पोषण व पूर्ण विकास हेतु आवश्यक साधन-सामग्री जुटाने का व्रत धारण करते हैं । बच्चे के नासिका-द्वार पर पिता द्वारा वायु का स्पर्श-बच्चे के दायें नासिका-द्वार पर पिता उँगली रखकर मंत्र बोलता है-"कोऽसि कतमोऽसि कस्यासि को नामासि----इत्यादि" । यहाँ प्रथम तो पिता अनुभव करता है कि बच्चे का श्वास भली-भाँति चल रहा है । पिता के लिये इतना ज्ञान तो अपेक्षित है कि वह बच्चे के श्वास-प्रश्वास को समझ सके । दूसरी बात है कि पिता बच्चे को देखकर स्वाभाविक रुप से प्रसन्न हो जाता है और उसे भी हँसाना चाहता है । प्यार से वह बच्चे के नासिकाग्र पर जब ऊँगलि रखता है तब बच्चा भी हँसने या प्रसन्नमुद्रा दिखने का यत्न करता है । हम इसे पितृ-प्यार का एक नमुना कह सकते हैं । प्रसन्न होता हुआ पिता मंत्र के माध्यम से कुछ प्रश्न पूछता है-कोऽसि---इत्यादि जिनका सामान्य अर्थ है-तुम कौन हो, कहाँ से आये हो, किसके हो और किस नामवाले हो ? इन प्रश्नों में बड़ा भारी पुनर्जन्म का सिद्धान्त छिपा हुआ है । कुछ अच्छी चीज जब हाथ में आती है तब जहाँ उसे पाने की प्रसन्नता होती है वहीं उसका अतीत व कुछ विशेष भी जानने की उत्सुकता जाग उठती है । वस, फिर क्या है-ऐसा जानें कि पिता गोद में आये बच्चे की आत्मा के पूर्व की स्थिति को जानने हेतु उत्सुक होते हुये प्रसन्नता वस इस तरह के प्रश्न करने लग जाता

है और इन प्रश्नों के माध्यम से जानना चाहता है कि वह आत्मा कौन है, कहाँ से आयी है, पूर्वकाल में किसकी थी और किस नामवाली थी ? स्पष्ट ही वेद ज्ञान का संकेत पुनर्जन्म की ओर है । शरीरधारी हर आत्मा कोई न कोई शरीर छोड़कर आती है । इसी तरह वह आत्मा शरीर छोड़कर भी पुन: शरीर धारण कर उसके द्वारा जन्मजन्मान्तर के कर्मफल का भुगतान करती है । यह आत्मा की प्रथम अवस्था है, अगर उसके कर्म इतने अच्छे हुये हैं कि उसे अब आवागमन का चक्र से छूटकारा मिल गया है तो उसे सीधा मुक्ति मिल जाती है-यह आत्मा की दूसरी अवस्था है । पिता सबके के बीच संतान को गोद में लेकर ऐसी ही प्रसन्नता और उपयुक्त ज्ञान-प्रक्रिया में आकर अनुभूति करता हुआ बच्चे को अपनी संतान स्वीकारता हुआ उसका विधिवत् नामकरण कर उसके पालन-पोषण की पूरी जिम्मेवारी लेता है । यहाँ एक और आध्यात्मिक अर्थ उभरकर आ सकता है । "क नाम सुखम्" ऐसा वैदिक ग्रन्थों में पढ़ा गया है । "क" का अर्थ सुख विशेष है तो इससे पिता अपनी प्रसन्नता इस प्रकार अभिव्यक्त करना चाहता है । कोऽसि=तुम मेरा सुख हो, कतमोऽसि= सुखरुप गृहस्थ प्रक्रिया से तुम मुझे मिले हो, कस्यासि=सब की भाँति तुम भी सुखस्वरुप प्रभु की संतान हो और को नामासि= सुखदेने वाली आत्मा रुप तुम मेरी संतान हो । पिता बच्चे के शिर पर हाथ रखकर उसे जीवन भर सुखी रहने का आशीर्वाद देकर सब आवश्यक साधन देने की प्रतिज्ञा करता है ।

आशीर्वाद- अन्त में उपस्थित लोगों के साथ पुरोहित माता-पिता के गोद में यज्ञ - वेदी पर बैठे बच्चे को इस प्रकार आशीर्वाद देता है-हे बालक/बालिके ! त्वं आयुष्मान्/आयुष्मती, वर्चस्वी/वचस्विनी, तेजस्वी/तेजस्विनी श्रीमान्/श्रीमती भूया:। अर्थात् बालक या बालिका आयुष्मान्या आयुष्मती, तेजस्वी/तेजस्विनी, वर्चस्वी/वर्चस्विनी और श्रीमान्/ श्रीमती बने ।

नोट- श्रीमान्/श्रीमती गृहस्थ अवस्था तक जाकर सुख पाने का आशीर्वाद है जो सब उपस्थित लोग बच्चे को देते हैं । कितना सुन्दर आशीर्वाद है । गृहस्थ सुख पाना सब चाहते हैं यह भाव यहाँ साक्षात् मुखरित हो आया है ।

Arya Samaj (West Midlands)

Hall Hire

Perfect venue for –

- **Engagements**
- **Religious Ceremonies**
- **Community events**
- **Family parties**
- **Meetings**

Venue information –

- **£300 for 6 hours (min.)**
- **£50 Hourly**
- **Main Hall with Stage**
- **Dining hall**
- **Kitchen**
- **Cleaning**
- **Small meeting room**
- **Vegetarian ONLY**
- **NO Alcohol**
- **Free parking**

For more informatiom call us on
0121 359 7727
Monday to Friday between: - 2pm to 6pm,
Except Wednesday: - 10.30am to 1.00pm Bank Holidays - Closed

अध्यात्म के शिखर पर-१८

आचार्य डॉ. उमेश यादव

प्रश्न है कि ब्रह्म और जीव पृथक् पृथक् कैसे हैं ? यहाँ जो ऐसा समझते हैं कि दोनों एक ही है, वे इन उपनिषद्वाक्यों का हवाला देते हैं और कहते हैं कि ये वेद-वाक्य हैं जो दोनों में अभिन्नता सिद्ध कर रहे हैं पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश के सप्तम समुल्लास में स्पष्ट किया कि प्रथम तो ये वेद वाक्य नहीं हैं अपितु ये उपनिषद्वाक्य हैं जो ब्रह्म और जीव एक नहीं, अपितु ब्रह्म और जीव भिन्न-भिन्न है ।

ये वाक्य हैं-

१. प्रज्ञानं ब्रह्म (ऐतरेय उपनिषद्३/५/३)

२. अहं ब्रह्मास्मि (बृहदारण्यक उप. १.४.१०, शतपथ ब्राह्मण-१४.४.४.५.१४)

३. तत्त्वमसि (छान्दोग्य उपनिषद्६.८.७)

४. अयमात्मा ब्रह्म (माण्डूक्योपनिषद्२, श.प. ब्रा. १४.४.४.१५).

ये चारों वाक्य उपर्युक्त विषय को सुलझाने में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं । महर्षि दयानन्द ने इनका सन्दर्भ स्पष्ट करते हुये सही अर्थ बताया और स्पष्ट किया कि इन वाक्यों से ब्रह्म और जीव एक ही है; ऐसा कदापि नहीं सिद्ध होता । अब हम इन्हें एक-एक करके समझते हैं-

प्रज्ञानं ब्रह्म- ब्रह्म प्रकृष्ट ज्ञानस्वरुप है । यहाँ ब्रह्म के विशेषण में प्रकृष्ट शब्द का प्रयोग हुआ है । प्रकृष्ट शब्द को यहाँ विशेष, उत्कृष्ट वा सर्वोत्तम अर्थ में लिखा गया है । ब्रह्म के समान और कोई अन्य ज्ञानस्वरुप नहीं हो सकता । वह तो स्वाभाविक रुप से सदैव सर्वश्रेष्ठ, पूर्ण व अनन्त ज्ञानवाला है पर जीव ऐसा नहीं है । जीव के ज्ञान में प्रकृष्टता/उत्तमता आ सकती है लेकिन पुरुषार्थ से; वह भी ब्रह्म के ज्ञान से न्यून, अनन्तता कभी नहीं

आ सकती क्योंकि जीव स्वभाव से अल्पज्ञ है । प्रयत्न से वह ज्ञान को बढ़ाता है और आलस्य से अपना ज्ञान घटाता है । इसी कारण मानव देह या अन्य प्राणी के शरीर में रहता हुआ जीव कम-बेसी ज्ञानवाला पाया जाता है । कोई काफी ज्ञानी तो कोई न्यून ज्ञानवाला । कोई बहुत ही मेधावी तो कोई मन्द वुद्धि वाला । अत: यह स्पष्ट है कि ब्रह्म और जीव एक नहीं अपितु दो अलग-अलग सत्ताये हैं ।

अहं ब्रह्मास्मि- इसका सामान्य अर्थ तो है-"मैं ब्रह्म हूँ" पर महर्षि दयानन्द ने प्रकरण के अनुसार इसका अर्थ किया- "मैं ब्रह्मस्थ हूँ " अर्थात् मैं ब्रह्म में स्थित हूँ । यह अर्थ जीव परक है । जीव योगसिद्धि/समाधि ब्रह्मस्थ हो कर ऐसा बोलता है क्योंकि ब्रह्मस्थ जीव मानो ब्रह्म की भाषा बोलने की अनुभूति करता है । यद्यपि ब्रह्मस्थ का सरल अर्थ है-ब्रह्म में रहने वाला । देखा जाये तो संसार के सब रुप और जीव ब्रह्म में ही रहते हैं । ब्रह्म को वेद में "हिरण्यगर्भ" कहा गया है । हिरण्यगर्भ: समवर्त्तर्ताग्रे.. स्तुति प्रार्थनोपासना- महर्षि दयानन्द । हिरण्य= स्वर्ण आदि सब धातुयें और सब प्राणी जगत् हिरण्यगर्भ ब्रह्म में स्थित हैं । इस तरह अहं ब्रह्मास्मि का अर्थ "मैं ब्रह्म हूँ" नहीं वल्कि "मैं ब्रहस्थ हूँ" कहना ही उचित है । इसको समझने में लौकिक उदाहरण अधिक सहायक हो सकता है । व्यवहार में ऐसा प्रयोग पाया जाता है- मंचा: क्रोशन्ति अर्थात् मंच पुकारते हैं । मंच तो जड़ है, वह बोल नहीं सकता तो ऐसा प्रयोग क्यों ? यह एक भाषा की विधा है । इससे यह अर्थ निकलता है कि मंच पर बैठे लोग पुकारते हैं । इसी तरह "अहं ब्रह्मास्मि" का व्यावहारिक अर्थ "मैं ब्रह्मस्थ हूँ " ही सार्थक है । इसको महर्षि दयानन्द ने "तात्स्थोपाधि-न्याय" कहा है । यह दर्शन की एक भाषा है । शरीरधारी जीव समाधि में ऐसा अनुभव करता है और कहता है कि अब मैं ब्रह्मस्थ हूँ । ब्रह्म के गुण-कर्म-स्वभाव में लिप्त जीव जो बोलता है वह मानो ब्रह्म की ही भाषा बोल रहा है । पर ऐसा नहीं है; वह केवल ऐसा प्रतीत ही करता है, न कि ब्रह्म ही बन जाता है । ब्रह्म और जीव सदा दो अलग-अलग सत्ता है । समाधि में साधर्म्य भाव से जीव के अन्दर केवल एकत्त्व की अनुभूति मात्र

होती है ।

तत्त्वमसि- यह छान्दोग्योपनिषद्का वचन है । वस्तुत: यह एक गुरु-शिष्य के संवाद में आचार्य ने शिष्य श्वेतकेतु को ईश्वर और जीव का भेद बतलाते हुये कहा- तत्त्वमसि- अर्थात् तत्= उस ब्रह्म से युक्त त्वम् असि= तू है । प्रकरण में ऐसा प्रयोग हुआ है- तदात्मकस्तदन्तर्यामी त्वमसि । स्वामी दयानन्द ने इसका अर्थ ऐसा किया- हे श्वेतकेतो प्रियपुत्र, उस परमात्मा अन्तर्यामी से तू युक्त है । "तत्त्वमसि" एक बड़े वाक्य से लिया हुआ छोटा सूत्र वाक्य है । इसे हम समझने की कोशिश करते हैं- पूर्ण वाक्य है- तदात्मकस्तदन्तर्यामी त्वमसि - इसका सरल रुप-तत् आत्मक: तत्अन्तर्यामी त्वम्असि -गुरु जी यह समझा रहें है कि हे श्वेतकेतु, तत् आत्मक: त्वम्असि- वह आत्मा रुप तुम हो और तत्अन्तर्यामी = वह सर्वव्यापक अन्तर्यामी परमात्मा है । इस तरह गुरु ने शिष्य को ईश्वर और जीव को दो भिन्न सत्ता बतलाकर स्पष्ट ज्ञान दिया । प्रकरण में जो बात जैसी कही जाये, उसको वैसे ही समझा जाये तो सही अर्थ जाना जा सकता है । हाँ, यह भी सच है कि सर्वव्यापक होने के नाते परमात्मा/ब्रह्म जीव में भी स्थित है, पर जीवात्मा से भिन्न है । हमें ऐसा ही जानना चाहिये । श.ब्रा. १४.५.५.३० देखें- स.प्र. ७ समु. महर्षि दयानन्द द्वारा विवेचन ।

अयमात्मा ब्रह्म- यहाँ मैं सीधा महर्षि दयानन्द का विवेचन प्रस्तुत करना चाहूँगा । इस सूत्र का अर्थ ऐसा किया गया - समाधि दशा में जब योगी को परमेश्वर प्रत्यक्ष होता है , तब वह कहता है कि यह जो मेरे में व्यापक है, वही ब्रह्म सर्वत्र व्यापक है । इस अर्थ-विवेचना से जीव और ब्रह्म का पृथकत्व स्पष्ट हो जाता है । योगी के अन्दर की जीवात्मा भिन्न है जो समाधि में अपने अन्दर व्यापक ब्रह्म की अनुभूति करता है जो साधर्म्य भाव में आकर एकात्मता का अनुभव करता है पर दोनों का निश्चित ही पृथक् पृथक् अस्तित्व है, हमें ऐसा ही जानना चाहिये । ।

Cost for our services

- Ordinary membership for Arya Samaj - £20 for 12 months.
- Hire of our hall £300 for 6 hours & there after £50 hourly.
- Matrimonial service - £90 for 12 months.
- Marriage Ceremony performed by our priest - £400.
- Havan performed at home by our priest will be £51.

CELEBRATION OF REPUBLIC DAY OF INDIA

The Celebration was held on Sunday 1st February and started with performing Havan and reciting Ved Mantras.

The Republic day of India honours the date on which the Constitution of India came in to force on 26th January 1950. This replaced the Government of India Act 1935 as the governing document of India. 26th January was selected for this purpose because it was this day in 1930 when the Declaration of Indian Independence was proclaimed by the Indian National Congress.

About 140 people attended this function. Mr. B.C. Pradhan, Acting Consul General of India, was the chief guest. Lord Mayor of Birmingham and Honourable Ms. Shabana Mahmood, MP from Nechells, also attended as guests.

The programme started with flag hoisting by Mr. Pradhan followed by singing of Indian National Anthem by the audience.

Mr. Shailesh Joshi, a member of the Board of Trustees, welcomed the guests and audience and acted as a compere of this event.

Lord Mayor spoke briefly and thanked and congratulated the audience on this day.

The students of Dr. Jessica's Classical Indian Dance School performed two patriotic dances.

Mrs. V. Cale and Mr. Suketu Yadav sang patriotic songs. The audience thoroughly enjoyed these items.

Mr. Pradhan read the message from the President of India. He also told the audience about the developments happening in India under the Prime Minister of India Honourable Mr. Narendra Modi and services provided by Indian Consulate in Birmingham. This was very much appreciated by the audience.

Acharya Umesh Yadav ji spoke about the contribution of Arya Samaj movement in gaining independence of India from British rule. He also told the audience about the importance of 16 Sanskar (Sacraments) in human lives.

Honourable MP Ms. Shabana Mahmood spoke about diverse Asian Community living in Birmingham. She also thanked the management for inviting her to the function.

MrAshok Sarana, our valued member, took the photographs of the function and helped with the food serving.

Towards the end Dr. Narendra Kumar, Chairman of the Board of Trustees, told the audience about compulsory purchase of our building by HS2 in year 2017. We have been promised by the officials of HS2 that they will provide us with a like for like building in future. We will meet officials of HS2 and Birmingham and Sandwell City Councils in very near future regarding this.

Dr. Kumar thanked all the guests and participants for making this celebration a success. He also thanked Acharya ji and members of the Board of Trustees including Shailesh ji for their help.

The function concluded with Arti and Shantipath.

VEDIC VIVAH (MATRIMONIAL) SERVICE

The vedic vivah (matrimonial) service has been running for over 30 years at Arya Samaj (West Midland) with professional members from all over the UK.

Join today.....

Application form and information can be found on the website
www.arya-samaj.org
Or
Call us on
0121 359 7727

Monday to Friday between: - 2pm to 6pm,
Except Wednesday: - 10.30am to 1.00pm
Bank Holidays – Closed

Notices for Vedic Vivah Service (matrimonial)

- Matrimonial service charge - £90 for 12 months

- **Save the date – Vedic Vivah Mela (Matrimonial get together) Saturday 30th May 2015. More details will be given in April's Aryan Voice, with application form.**

- Please note that Arya Samaj Birmingham and Arya Samaj London are not linked. We both have our **OWN** Matrimonial list and all events are organized **separately.**

- Please note in every issue of Aryan Voice, if anyone that has a * asterisk at the end of there Job, **ONLY** wants to marry in there own caste. Eg

B4745 Hindu Brahmin Boy 26 5 ' 7" Chartered Accountancy*

- All members' records have not been changed yet, as we are still waiting on caste forms, please keep checking this information every issue before you call.

- If you would like to add your caste to your record or state if you only want to marry in caste. Please e-mail or call us, so we can update your record.

- Everymonth in matrimonial list please check whole list, as members that have been deleted, may renew again months later and are being missed, as they take there place on the list depending on ref number order.

- Please inform us when your son or daughter is engaged or married, so we can remove their detail from the list.

VICHAR GYAN PRAVAH

On

Astha TV
Sky Channel 837

At

9.30pm
Every evening

20minutes talk
by a learned Vedic Scholar.

List of Festivals for Year 2015

- **Rishi Bodh Utsav** — **Sunday 22nd February**
- **Holi** — **Sunday 8th March**
- **Ram Navmi** — **Sunday 29th March**
- **Arya Samaj Foundation Day** — **Sunday 12th April**
- **Annual General Meeting** — **Sunday 26th July**
- **Indian Independence Day** — **Sunday 16th August**
- **Raksha Bandhan** — **Saturday 29th August**
- **Ved Katha (8 days)**

  Saturday 29th August to Saturday 5th September
- **Krishna Janmastmi** — **Saturday 5th September**
- **Gayatri Maha Yajna** — **Sunday 6th September**
- **Dussehra** — **Sunday 25th October**
- **Diwali Celebration** — **Saturday 14th November**

News

Condolence:

- **Dr Amit Rastogi & family for the loss of his mother Dr Renu Rasatogi. Dr Renu Rastogi was a very active, devoted, humble and dedicated member of Arya Samaj West Midlands. She was a very active member of the Friends Group at Arya Samaj West Midlands who meet every Wednesday. She was one of the most generous members of our Samaj. She had been a member of the Executive Committee of Arya Samaj. May God grant the departed soul eternal peace and the strength to every family member to bear the time of sorrow.**

- **Colonel Surjit Kumar, Brother in Law of Dr Umesh Kathuria, passed away on Saturday 14th February 2015. He lived in Chigwell, Essex. Colonel Surjit Kumar is survived by his wife Mrs Shashi Kumar & two sons. We pray to almighty God to grant eternal peace to the soul of Colonel Surjit Kumar and give strength to his wife, sons and relatives to bear this loss.**

Prayers to God for Get-Well soon:

- **Mr V.N. Bhandari. - He had a knee operation last month and is recovering well.**

- **Mr Arjun Snehi. - He had hip operation last month and is recovering well.**

- **Mrs Minu Agarwal. – She had shoulder operation and is recovering well.**

- **Mrs Santosh Sethi – She had an arm facture and is recovering well.**

Congratulations:

- **Mr M.L. Seth and family - for being blessed with a grandson.**
- **Dr Bhoresh Dhamija & family - for Mundan Sanakar of their son Dhruv.**
- **Dr Paul Nischal & family for Lohri - Havan to bless their grandson Shivesh.**
- **Mr Rajan Sasan and family - 1st Lohari-celebration for grandson.**
- **Mr Harish Bahal – Grih - pravesh havan by his son Akash and daughter-in-law Avadhi Bahal.**
- **Mr Deepak Panwar and family – Havan for opening a new shop.**

Donations to Arya Samaj West Midlands

• **Mr M.L. Seth – Yajman**	**£51**
• **Mr M.L. Seth – for Rishi Langar on 25.01.2015**	**£240**
• **Mr Brij Bhushan Agarwal – for Rishi Langar contribution**	**£20**

- **Dr P.D. Gupta –**
  for Rishi- Langar- contribution on IndianRepublic day celebration on 01.2.2015 £101
- **Miss Charu Malhotra £51**
- **DR N.K. Agarwal £40**
- **Mr Prem Nanda £20**
- **Mrs Surinder Aggarwal £11**
- **Dr Ashok Ray £20**
- **Mrs Ved Datta £11**
- **Mrs Asha Verma (£8+£10) £18**
- **Ms C.P. Snatika £20**
- **Anonymous £30**
- **Dr Bhoresh Dhamija –**
  for Rishi.Langar including donation - yajman £302

Donations to Arya Samaj through Priest Services.

- **Mr Paul Nischal £100**
- **Mr Nitin Prashar £51**
- **Mr Rajan Sasan £11**
- **Dr Gautam Rajkhoiya £50**
- **Mr Harish Bahal £50**
- **Mr Deepak Panwar £51**
- **Mr Arjun Snehi £10**

Many-many cordial thanks to all

Yajmans /Sponsors for havans and donors as well.

Please contact Acharya Dr Umeh Yadav on 0121 359 7727 for more information on

- **Member or non member wishing to be a Yajman in the Sunday congregation to celebrate an occasion or to remember a departed dear one.**

- **Have Havan, sankars, naming, munden, weddings and Ved Path etc performed at home.**

- **Our premises are licensed for the civil marriage ceremony.**

- **Please join in the Social group at Arya Samaj West Midlands every Wednesday from 11am. Emphasis is on keeping healthy and fit with yoga and Pranayam. Hot vegetarian Lunch is provided at 1pm.**

- **Ved Prachar by our learned Priest Dr Umesh Yadav on Radio XL 7 to 8 am, first Sunday of the month. Next 1st March 2015 & 5th April 2015.**

Every effort has been taken that information given is correct and complete. But if any mistake is spotted please inform the office.

0121 359 7727

E-mail- enquiries@arya-samaj.org
Website: www.arya-samaj.org